Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

जनपद मेरठ के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का उनके महाविद्यालयी वातावरण से तुलनात्मक अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

जनपद मेरठ के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का उनके महाविद्यालयी वातावरण से तुलनात्मक अध्ययन

Mohamad Aaga

Research Scholar, Sai Nath University, Ranchi, Jharkhand

सार : – प्राचीन युग से ही भारत में शिक्षा को अत्याधिक महत्व दिया गया है। हमारे मनीषी इस तथ्य से भलीभाँति अवगत थे कि शिक्षा न तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची है औ न ही केवल जीविकोपार्जन का साधन, इसके विपरीत शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, समाज की चतुर्मुखी उन्नति और सभ्यता की बहुमुखी प्रगति की आधार–शिला है। उन्होंने शिक्षा को प्रकाश एवं शक्ति का ऐसा स्रोत माना जो व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों एवं क्षमताओं का विकास करके उसके चरित्र एवं व्यक्तित्व को उत्कष्ट बनाती है। इसीलिये प्राचीन भारत के मनीषियों ने शिक्षा की ऐसी प्रणाली का प्रतिपादन किया जिसने न केवल वैदिक साहित्य को सुक्षित रखा, वरन् ज्ञान के विविध क्षेत्रों में मौलिक विचारों को भी जन्म दिया। श्री अरविन्दों और गाँधी जी ने अपने 'बुनियादी शिक्षा' के सिद्धान्त में ऐसी शिक्षा एवं शिक्षा प्रणाली अपनाने पर जोर दिया जो बच्चे और मनुष्य की शारीकि, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास करके उन्हें आत्मनिर्भर बना सके।

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना :

आधुनिक काल में शिक्षा शब्द का प्रयोग नये अर्थ में किया जाने लगा है। और शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का संतुलित विकास करना है। बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास वातावरण के सम्पर्क में आने से होता है। बालक प्रतिक्रिया करता रहता है। जिसके फलस्वरूप उसे ज्ञान के साथ ही अनुभव प्राप्त होता है जिससे वह सीखता है, समझता है और तद्नुसार व्यवहार करता है। इस प्रकार शिक्षा मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन से सम्बद्ध है अर्थात् शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। इसी के द्वारा बालक के वर्तमान व भावी जीवन का निर्माण होता है तथा उसके विकास के लिए उपयुक्त वातावरण और साधन प्रदान किये जाते है। शिक्षा की किसी भी परिभाषा में उसे शारीरिक शिक्षा से अलग करना सम्भव नहीं है, क्योंकि दोनों के उद्देश्य समान होते हैं। जिनके द्वारा मनुष्य में सुन्दर शारीरिक स्वास्थ्य, कार्य–कौशल, अवकाश का सदुपयोग, स्पष्ट सोचने की शक्ति तथा स्वस्थ संवेगों का विकास होता है। इस प्रकार हम देखते है कि शिक्षा चाहे जैसी भी हो औपचारिक अथवा अनौपचारिक, इसका उद्देश्य मनुष्य का समन्वित समग्र एवं सन्तुलित विकास करना है। शिक्षण कार्य में मनुष्य का मन और शरीर दोंनो सम्मिलित रहता है। मनुष्य की अद्वैत प्रकृति शिक्षा का एक मौलिक सूत्र है। जैविक तथा सांस्कृतिक विकास व शारीरिक शिक्षा का अध्यापक के साथ गहरा सम्बन्ध है। शारीरिक व्यायाम, जिसका उपयोग आदिकाल में मनुष्य ने प्रायः आहरोपार्जन एवं संरक्षण के लिए किया, उसका अस्तित्व, स्वास्थ्य का मूल–धार है। आज के यंत्र प्रधान युग में मनुष्य के लिए स्वास्थ्य अत्यन्त आवश्यक है। व्यायाम करने से व्यक्ति का केवल कार्यकुशलता की दृष्टि में स्वास्थ्य ही नहीं बनता बल्कि उसके मानसिक तथा सांवेगिक तनावो का भी निष्कासन होता है। यदि मनुष्य ने अपने आपको मानसिक प्रक्रिया पर अधिक आश्रित रखा तथा शारीरिक क्रिया की अवहेलना बनाये रखी तो उसका भविष्य कैसा होगा, इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। शारीरिक व्यायाम सदैव मनुष्य के आकर्षण का केन्द्र इसलिए भी रहेगा क्योंकि इससे उसकी कार्यक्षमता विकसित होती है। खेलक्रीडा, स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्यता के निर्माण का अति उत्तम साधन है। यह सर्वविदित है कि आज विश्व सम्पूर्ण यंत्रीकरण की दिशा में अग्रसर हो रहा है जिसके कारण शारीरिक प्रयास और भी कम होने लगेगा जो वास्तव में मनुष्य की उत्तरजीविता के लिए हानिकारक सिद्ध होगा। पतन की बाढ़ को रोकना है, नही तो मनुष्य का अस्तित्व मस्तिष्क तक ही सीमित रह जायेगा। शिक्षा कतिपय उद्देश्यों को आगे रखकर चलती है। इन उद्देश्यों द्वारा हम मनुष्यों को अच्छे स्तर का बौद्धिक एवं सामाजिक प्राणी बनाना चाहते है। हम यह भी चाहते है कि वह सद्भाव्य सीखे तथा नागरिकता की सद्भावना से ओतप्रोत हो बौद्धिक विकास में मनुष्य के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक होता है कि वह अपने अन्दर निहित गुणों तथा प्रतिभावों को समझे। यह अर्थ ज्ञान संचय से कही अधिक है–अर्थ यह है कि मनुष्य अपने वातावरण में रहते हुए अनुभव करें कि वातावरण से उसका सम्बन्ध घनिष्ठ हो चला है। वहॉ की संस्कृति से उसका अनुबन्ध हो गया है। इस बौद्धिक चेतना में, जिसके द्वारा मनुष्य अपनी शक्तियों एवं गुणों को भलीभाँति समझता है, इसमें शिक्षा तथा शारीरिक शिक्षा एक बहुत बडा योगदान कर सकती है। छात्रो की क्षमतानुसार यदि उन्हें प्रतिदिन चुनी हुई नामक क्रियाओ में भाग लेने का अवसर दिया जाये तो उनकी स्वस्थता बढ़ जाती है। स्वास्थ्य की सुन्दर क्रियाओं के अभ्यास से उनमें स्वास्थ्य विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान की वृद्धि होती है तथा उनके व्यवहार में संशोधन हो जाता है। सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास के द्वारा मनुष्य सदा अपने रचनात्मक रूप में प्रकट होता रहता है। जहां शारीरिक शिक्षा द्वारा मन जिज्ञासु होता है। वही शिक्षा के द्वारा उस जिज्ञासु मन को शान्त किया जाता है। जिज्ञासा शिक्षित पुरूष के लिए अति आवश्यक होती है। इसी जिज्ञासा की बदौलत हम अपने वातावरण को जानने का प्रयास करते है। शिक्षा न तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची है और न ही केवल जीविकोपर्जन का साधन, इसके विपरीत शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, समाज की चतुर्मुखी उन्नति और सभ्यता की चहुंमुखी प्रगति की आधार–शिला है। शिक्षाविदों ने शिक्षा को प्रकाश एवं शक्ति का

ऐसा स्त्रोत माना है जो व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शाक्तियो एवं क्षमताओं का विकास करके उसके चरित्र एवं व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाती है।

समायोजन :

समायोजन से अभिप्राय है कि कितनी कुशलता से व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में अपने कार्यो व कर्तव्यो का प्रतिपालन करता है। किसी व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक कारकों की उसके वातावरण के साथ क्रिया को ही समायोजन कहते है। दूसरे शब्दो मे–समायोजन मानव जीवन का प्रमुख अंग है। जीवन के प्रति अनुकूलन ही समायोजन की प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया का मानव जीवन मे विशेष महत्व है। यह किसी प्राणी का उसके वातावरण के साथ उपर्युक्त तथा संतोषप्रद सम्बन्ध है। इस प्रकार समायोजन को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है। श्यह वातावरण तथा वातावरणीय परिवर्तनो के साथ अनुकूलित करने वाले व्यवहारो को ढूंढने की प्रक्रिया है।श समायोजन के कई प्रकार होते है। जैसे कि–स्वास्थ्य समायोजन, गृहस्थ समायोजन, सामाजिक समायोजन, विद्यालयी समायोजन, भावात्मक सामायोजन, व्यवसायिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन आदि। समायोजन को सामंजस्य, व्यवस्थापन तथा अनुकूलन भी कहते है। समायोजन दो शब्दो से मिलकर बना है – समा और आयोजन/सम का अर्थ है :– भली–भॉति, अच्छी तरह से तथा समान रूप से ओर आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात् अच्छी तरह से व्यवस्था करना। अतः समायोजन का अर्थ हुआ अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनूकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएं पूरी हो जाएं और मानसिक द्वन्द्व उत्पन्न न होने पाए। मनुष्य की अनेक आवश्यकताएं होती है, यही आवश्यकताएं मनुष्य को लक्ष्य प्राप्ति की ओर प्रेरित करती है और वह आगे बढ़ता है। जब व्यक्ति को अपने लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से हो जाती है तो उसे संतोष का अनुभव होता है किन्तु जब उसे एक अप्रिय अनुभूति होती है जिसे असंतोष, हताशा, निराशा या कुण्ठा कहते हैं। इस प्रकार जब व्यक्ति को अपनी इच्छाओं और रूचियों के प्रतिकूल शक्तियों का सामना करना पडता है तो उसके अन्दर मानसिक द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार मानसिक द्वन्द्व के परिणामस्वरूप व्यक्ति में मानसिक तनाव उत्पन्न हो जाता है। तनाव के कारण व्यक्ति के मन में एक प्रकार की उथल–पुथल मच जाती है जिसे दूर करने के लिए वह बाधाओं को दूर करने का प्रयास करता है।

महाविद्यालयी वातावरण :

महाविद्यालयी वातावरण से अभिप्राय महाविद्यालय के खुले एवं बन्द वातावरण से है। बालक का व्यक्तित्व प्राकृतिक तथा वातावरणीय गुणों का उत्पाद होता है। प्राणी का जन्मजात स्वभाव होता है कि वह वातावरण में होने वाली पारस्परिक क्रियाओ का निरीक्षण करता है, तथा उन्ही व्यवहारों को ग्रहण करने की कोशिश करता है। इसलिए यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि सीमित जन्मजात योग्यताओं के अलावा, वह कारक परिवेश वातावरण ही है जो बालक के विकास को प्रभावित करता है। आज सभी प्रबुद्ध व्यक्ति यह मानते है कि बालक का समुचित विकास तब तक नही किया जा सकता जब तक कि बच्चों के असीम जिज्ञासा से भरे ओजस्वी मस्तिष्क को तृप्त एवं विकसित करने के लिए स्वस्थ शैक्षिक, पारिवारिक तथा सामाजिक वातावरण का निर्माण नही किया जायेगा। मनोविज्ञान के आधुनिक सिद्धान्त बताते है कि बालक के विकास में वातावरण का प्रभाव सर्वप्रमुख होता है। सभी व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक बालक के विकास में वातावरण के निर्णायक प्रभाव को स्वीकारते है। प्रसिद्ध व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक वाटसन ने तो यहां तक कह डाला है कि "तुम मुझे कोई भी बच्चा दे दो जो कहोगे उसे वही बना दूँगा।" वाटसन की उपर्युक्त उक्ति में वातावरण का बालक पर कितना अधिक प्रभाव पड़ता है, स्पष्टतः परिलक्षित होता है।

व्यक्ति वातावरण से अन्तः क्रिया करके अपने व्यवहारों को इस प्रकार परिवर्तित करता है कि वातावरण के साथ उसका उचित सामंजस्य हो सके। व्यक्ति के व्यवहार में आए इस प्रकार के परिवर्तन को अधिगम कहते है। कुछ वातावरण इस प्रकार के होते है कि उनमें व्यक्ति को सीखने में सुविधा होती है जबकि इसके विपरीत अन्य प्रकार के वातावरण में उसे असुविधा होती है। यदि सीखने के लिए व्यक्ति को उचित वातावरण प्रदान किया जाए तो अधिगम में गुणात्मक वृद्धि हो सकती है। "शिक्षण एक ऐसी ही प्रक्रिया है, जिसमें अधिगमकर्ता के सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाना ही शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। वास्तव में उचित वातावरण का निर्माण करके अधिगमकर्ता के सामने आने वाली कठिनाईयो को दूर करके अधिगम की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाना ही शिक्षण है।"

यहां पर वातावरण के सृजन से तात्पर्य विभिन्न आयामों को संगठित करके इस प्रकार प्रस्तुत करने से है, जिसमें अधिगमकर्ता को पूर्व–निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलती हैं विभिन्न प्रकार के शिक्षण वातावरण को बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। एक प्रकार का शिक्षण वातावरण कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति में छात्रों के लिए सहायक होता है। अतः शिक्षण वातावरण बनाने की एक ही विधि से छात्रों को सभी प्रकार के अधिगम के लिए दक्ष नहीं किया जा सकता। दूसरे शब्दों में एक ही शिक्षण विधि का प्रयोग करके शिक्षक कुछ निश्चित उद्देश्यों को ही प्राप्त कर सकता है।

शोध साहित्य का अध्ययन :

कौर एवं बावा (1995) ने शैक्षिक निष्पत्ति के एक सह संबंध के रूप में बुद्धि का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में पटियाला के 27 विद्यार्थियों के कक्षा प के 320 विद्यार्थी (160 बालक और 160 बालिकाएं) चुने गये। उपकरण के रूप में टंडन का ग्रुप टेस्ट ऑफ इंटेलिजेंस, रेवन का प्रोग्रेसिव मैट्रिवंच और पंजाब स्कूल एजूकेशन बोर्ड की परीक्षा के परिणाम का उपयोग किया गया। शोध के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार रहे– (1) यह पाया गया कि बालकों और बालिकाओं की सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि तथा अंग्रेजी व सामाजिक अध्ययन की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही था। (2) यह पाया गया कि गणित, पंजाबी, हिन्दी और विज्ञान विषयों में बालकों और बालिकाओं में सार्थक अंतर था जो गणित को छोड़कर अन्य सभी विषयों में लड़कियों के पक्ष में पाया गया। (3) शाब्दिक बुद्धि में बालकों और बालिकाओं में सार्थक अंतर पाया गया जो बालकों के पक्ष में था। अशाब्दिक बुद्धि के विषय में भी ऐसा ही पाया गया। (4) यह पाया गया कि शाब्दिक बुद्धि का हिन्दी, पंजाबी और अंग्रेजी के संबंध मे धनात्मक और सार्थक संबंध था जबकि अशाब्दिक बुद्धि का गणित, विज्ञान और सामाजिक अध्ययन के साथ धनात्मक और सार्थक संबंध पाया गया।

कुमार (1996) ने बुद्धि और विद्यालयी निष्पति के संबंध में स्कूली बच्चों के बीच जिज्ञासा का अध्ययन किया। अलीगढ़ जिले के माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त 14 यादृच्छिक चयनित माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा टप्प में पढ़ने वाले 1024 छात्र (572 बालक और 542 बालिका) प्रतिदर्श के रूप में चुनें गये। उपकरण मे रूप में शोधकार्ता का चिल्ड्रेन

www.ignited.in

क्यूरिआसिटी स्केल, आर.के. टंडन का जनरल इंटेलिजेंस टेस्ट और विद्यालय के अभिलेख का उपयोग किया गया। शोध के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार रहे– (1) जिज्ञासा और बुद्धि के बीच सह संबंध कम किन्तु सार्थक व धनात्मक पाया गया। (2) जिज्ञासा और विद्यालयी निष्पत्ति के मध्य सह–संबंध गुणांक सार्थक रूप और धनात्मक पाया गया। (3) बालकों की जिज्ञासा का औसत मान बालिकाओं की तुलना में सार्थक रूप में अधिक पाया गया। (4) शहरी छात्रों की जिज्ञासा का औसत मान ग्रामीण छात्रों की तुलना में सार्थक रूप में अधिक नही पाया गया। (5) उच्च तथा निम्न जिज्ञासा वाले छात्रों के बुद्धि के मध्यमान में सार्थकता पायी गयी और यह उच्च जिज्ञासा वालों के पक्ष में था। (6) उच्च तथा निम्न जिज्ञासा वाले छात्रों की विद्यालयी निष्पत्ति के मध्यमान में सार्थक अंतर पाया गया।

कृष्ण मूर्ति (1998) ने उच्चतर माध्यमिक छात्रों में इतिहास अध्ययन में उपलब्धि का रूचि, अध्ययन के प्रति अनुकूल व प्रतिकूल अभिवृत्ति तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि–अभिप्रेरणा से सम्बन्धित अध्ययन किया। तथ्यों के संकलन हेतु उच्चतर माध्यमिक के 455 छात्रों के न्यादर्श पर यह अध्ययन केन्द्रित था। उपकरण मे कक्षा ग्प् के छात्रों के लिए 'इतिहास में उपलब्धि परीक्षण', 'इतिहास रूचि प्रश्नावली', 'इतिहास अध्ययन के प्रति छात्रों की अभिवृत्ति मापनी' तथा 'शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी' उपकरणो का प्रयोग किया गया। शोध मे प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए – (1) छात्रों की उपलब्धि में माता–पिता की शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। (2) छात्रो की उपलब्धि को बढ़ाने में शैक्षिक उपलब्धि–अभिप्रेरणा एक बहुत विस्तृत भूमिका अदा करती है। (3) छात्रों की रूचि व उनकी इतिहास में उपलब्धि के मध्य बहुत निम्न व सकारात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया। हसीन (1999) ने किशोरों की उपलब्धि पर सामाजिक वर्ग, माता–पिता, बच्चे के अन्तरक्रिया, आश्रित व्यवहार तथा स्कूल प्रबन्ध तंत्र के प्रभाव का अध्ययन किया। तथ्य संकलन हेतु 98 बालक–बालिकाओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। उपकरण हेतु प्रभाव राम लिंगास्वामी व बलराम शर्मा का 'प्री–एडोलसेन्ट डिपेन्डेन्सी स्केल' एस.वी. काले का 'पैरेन्ट–चाइल्ड इन्टर एक्शन स्केल' एवं कुप्पूस्वामी का 'सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी' का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष प्राप्त हुए– (1) किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर सभी चार आश्रित चरों जैसे सामाजिक वर्ग, माता–पिता–बालक अन्तर क्रिया, आश्रित व्यवहार तथा स्कूल प्रबन्ध तंत्र का सार्थक प्रभाव पाया गया। (2) शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग–भेद का कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया।

शोध निष्कष पर परिचर्चा :

खिलाड़ी महाविद्यालयों तथा गैर खिलाड़ी महाविद्यालयो के विद्यार्थियो के समायोजन में उनके वातावरण के आधार पर कोई अन्तर नही है

सारणी–1

खुले महाविद्यालयी वातावरण के ख़िलाड़ी एंव गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों के समायोजन की तुलना।

क्र0 सं0	विमाएं	महाविद्यालय	छात्रों की संख्या (n)	मध्यमान	मानक विचलन	"टी–मूल्य"
1	गृह	गैर खिलाडी	100	34.385	5.197	5.412**
		खिलाडी	60	31.205	6.482	
2	स्वास्थ्य	गैर खिलाडी	100	31.225	5.652	8.023**
		खिलाडी	60	35.740	6.603	
3	सामाजिक	गैर खिलाडी	100	36.110	5.332	5.669**
		खिलाडी	60	32.770	6.404	
4	संवेगात्मक	गैर खिलाडी	100	31.455	6.002	8.204**
		खिलाडी	60	36.430	6.125	
	कुल योग	**गैर खिलाडी**	**100**	**133.175**	**22.183**	**8.044****
		खिलाडी	**60**	**136.145**	**24.614**	

गैर खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों की संख्या = 100

खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों की संख्या = 60

प्राप्त टी–मूल्य विश्वास दोनो स्तरो पर सार्थक।

सारणी–1 में खुले महाविद्यालयी वातावरण वाले खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों के समायोजन की चारों विभाओं पर तुलना की गयी है। तालिका–2(क) के विश्लेषण से पता चलता है समान शैक्षणिक वातावरण (खुला) में खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी महाविद्यालयों छात्रों समायोजन टी–मूल्य समायोजन मापनी की प्रथम विमा अर्थात गृह समायोजन पर सार्थक सम्बन्ध को दर्शाता है यहाँ खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों का गृह समायोजन मध्यमान (डत्र31०205) गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों के गृह समायोजन (डत्र34०385) मध्यमान से कम है। समायोजन मापनी की दूसरी विमा अर्थात स्वास्थ्य समायोजन में भी प्राप्त टी–मूल्य सार्थक सम्बन्ध ही दर्शाता है परन्तु यहाँ खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों का स्वास्थ्य समायोजन मध्यमान (डत्र35०740) गैर खिलाडी महाविद्यालयी छात्रों के स्वास्थ्य समायोजन मध्यमान (डत्र31०225) से अधिक है।

समायोजन मापनी की तीसरी विमा अर्थात सामजिक समायोजन पर प्राप्त टी–मूल्य भी सार्थक सम्बन्ध दर्शाता है तथा प्राप्त टी–मूल्य विश्वास के दोनों स्तरों पर सार्थक है। यहाँ पुनः खिलाडी महाविद्यालयी छात्रों का सामाजिक समायोजन मध्यमान (डत्र32०770) गैर खिलाड़ी छात्रों के सामाजिक समायोजन मध्यमान (डत्र36०110) से कम है। इसी प्रकार समायोजन मापनी की चौथी विमा अर्थात संवेगात्मक समायोजन में गैर खिलाडी तथा खिलाड़ी छात्रों के सम्बन्ध का प्राप्त टी–मूल्य विश्वास के दोनों स्तरों पर सार्थक है तथा खिलाड़ी छात्रों का संवेगात्मक समायोजन मध्यमान (डत्र36०430) गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी

छात्रों के संवेगात्मक समायोजन मध्यमान (डत्र31º455) से उच्च हैं।

सारणी–2

बन्द महाविद्यालयी वातावरण के ख़िलाड़ी एंव गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों के समायोजन की तुलना।

क्र0 सं0	विमाएं	महाविद्यालय	उत्तरदताओं की संख्या (n)	मध्यमान	मानक विचलन	"टी– मूल्य"
1	गृह	गैर खिलाडी	100	37.190	5.372	9.068**
		खिलाडी	60	31.580	3.072	
2	स्वास्थ्य	गैर खिलाडी	100	31.310	2.982	18.28**
		खिलाडी	60	40.170	3.865	
3	सामाजिक	गैर खिलाडी	100	40.300	3.646	17.97**
		खिलाडी	60	31.920	2.908	
4	संवेगात्मक	गैर खिलाडी	100	31.620	3.196	17.95**
		खिलाडी	60	41.240	4.306	
	कुल योग	**गैर खिलाडी**	**100**	**140.420**	**15.196**	**25.17****
		खिलाडी	**60**	**144.910**	**14.151**	

'' प्राप्त टी–मूल्य विश्वास दोनो स्तरो पर सार्थक है।

सारणी–2 में बन्द महाविद्यालयी वातावरण वाले गैर खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों की खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों से समायोजन की चारों विमाओं पर तुलना की गयी है।

इस प्रकार बन्द शैक्षणिक वातावरण वाले खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी महाविद्यालयों के विद्यार्थियो के समायोजन की तुलना करने पर पाया गया कि समायोजन मापनी की प्रथम विमा अर्थात गृह समायोजन पर प्राप्त टी–मूल्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है यहां खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों का गृह समायोजन मध्यमान (डत्र31º580) गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों के गृह समायोजन मध्यमान (डत्र37º190) से कम पाया गया। समायोजन मापनी की दूसरी विमा अर्थात स्वास्थ्य समायोजन पर प्राप्त टी–मूल्य भी सार्थक है। तथा खिलाडी महाविद्यालयी छात्रो का स्वास्थ्य समायोजन मध्यमान (डत्र40º170) गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों के स्वास्थ्य समायोजन मध्यमान (डत्र31º310) से उच्च है।

समायोजन मापनी की तीसरी विमा अर्थात सामाजिक समायोजन पर भी टी–मूल्य खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी से सार्थक रूप से प्रभावित होता है इसमें खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों का सामाजिक समायोजन मध्यमान (डत्र31º920) गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों के सामाजिक समायोजन मध्यमान (डत्र40º300) से कम पाया गया। इसी प्रकार समायोजन मापनी की चौथी विमा अर्थात संवेगात्मक समायोजन पर सार्थक टी–मूल्य प्राप्त होता है तथा खिलाडी महाविद्यालयी छात्रो का संवेगात्मक समायोजन मध्यमान (डत्र41º240) गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों के संवेगात्मक समायोजन मध्यमान (डत्र31º260) से उच्च पाया गया।

उपसंहार :

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु खुले महाविद्यालयी वातावरण वाले गैर खिलाड़ी तथा खिलाड़ी महाविद्यालयों के छात्रों के समायोजन के सम्बन्ध में समायोजन की विमाओ यथा गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक तथा संवेगात्मक समायोजन से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त कर आंकड़ो का सांख्यिकीय प्रविधि टी–प्रविधि से परीक्षण किया गया। समायोजन मापनी की प्रथम विमा अर्थात् गृह समायोजन पर प्राप्त टी–मूल्य सार्थक सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। यहाँ पर गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों का गृह समायोजन मध्यमान खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों के गृह समायोजन मध्यमान से उच्च है अर्थात् खिलाड़ी छात्रों का गृह समायोजन समान महाविद्यालयी वातावरण (अर्थात खुला) होने पर भी गैर खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों से सार्थक रूप से उच्च है। समायोजन की दूसरी विमा अर्थात् स्वास्थ्य समायोजन पर प्राप्त टी–मूल्य सार्थक सम्बन्ध प्रदर्शित करता है। यहाँ खुले वातावरण वाले खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्र खुले वातावरण वाले गैर खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों से समायोजन की स्वास्थ्य समायोजन विमा पर अधिक समायोजन प्रदर्शित करते हैं। समायोजन की तीसरी विमा अर्थात सामाजिक समायोजन पर भी गैर खिलाड़ी तथा खिलाड़ी महाविद्यालयों के छात्र सार्थक सम्बन्ध प्रदर्शित करते हैं। यहाँ गैर खिलाडी महाविद्यालय के छात्रों के सामाजिक समायोजन मध्यमान खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों के सामाजिक समायोजन मध्यमान से उच्च है अर्थात समान महाविद्यालयी वातावरण (अर्थात खुला) होने पर भी गैर खिलाडी महाविद्यालयों के छात्रों का सामाजिक समायोजन खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों के सामाजिक समायोजन से सार्थक रूप से उच्च है। समायोजन की चौथी विमा अर्थात संवेगात्मक समायोजन पर भी गैर खिलाड़ी तथा खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त होता है। यहां गैर खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों का संवेगात्मक समायोजन मध्यमान खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों के संवेगात्मक समायोजन मध्यमान से कम है अर्थात समान वातावरण (अर्थात खुला) होने पर भी खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों का संवेगात्मक समायोजन गैर खिलाड़ी छात्रों के सवेगात्मक समायोजन से सार्थक रूप से उच्च है। इसी प्रकार बन्द महाविद्यालयी वातावरण वाले गैर खिलाड़ी छात्रो का समायोजन की प्रथम विमा अर्थात गृह समायोजन पर प्राप्त मध्यमान खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रो के गृह समायोजन मध्यमान से उच्च है। यहाँ पर प्राप्त सार्थक टी–मूल्य प्रदर्शित करता है कि बन्द महाविद्यालयी वातावरण वाले गैर खिलाड़ी छात्रों का गृह समायोजन खिलाड़ी महाविद्यालय के छात्रों से सार्थक रूप से उच्च है। समायोजन की दूसरी विमा अर्थात् स्वास्थ्य समायोजन पर भी गैर खिलाड़ी तथा खिलाड़ी छात्रों के मध्य सार्थक सम्बन्ध प्राप्त होता है। यहाँ पर खिलाड़ी छात्रों का स्वास्थ्य समायोजन मध्यमान गैर खिलाड़ी छात्रों के स्वास्थ्य समायोजन मध्यमान से उच्च है अर्थात् समान महाविद्यालयी वातावरण (अर्थात बन्द) होने पर भी खिलाड़ी महाविद्यालयों के छात्र गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों से अधिक स्वास्थ्य समायोजन प्रदर्शित करते हैं। इसी प्रकार सामाजिक समायोजन की विमा पर भी खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी महाविद्यालयों के छात्र सार्थक अन्तर प्रदर्शित करते है। यहाँ पर गैर खिलाड़ी छात्रों के सामाजिक समायोजन मध्यमान खिलाड़ी छात्रों के सामाजिक समायोजन मध्यमान से उच्च है। अर्थात समान महाविद्यालयी वातावरण (अर्थात बन्द) होने पर भी गैर खिलाड़ी महाविद्यालयो के छात्र, खिलाडी महाविद्यालयों के छात्रों से सार्थक रूप से उच्च सामाजिक समायोजन प्रदर्शित करते है। समायोजन की चौथी विमा अर्थात संवेगात्मक समायोजन पर भी गैर खिलाड़ी तथा खिलाड़ी महाविद्यालयो के छात्र सार्थक

टी–मूल्य प्रदर्शित करते हैं। यहाँ पर खिलाड़ी छात्रों का संवेगात्मक समायोजन मध्यमान भी गैर खिलाड़ी छात्रों के संवेगात्मक समायोजन मध्यमान से उच्च है। अतः समान महाविद्यालयी वातावरण (अर्थात बन्द) होने पर भी खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों का संवेगात्मक समायोजन गैर खिलाड़ी महाविद्यालयी छात्रों के संवेगात्मक समायोजन से सार्थक रूप से उच्च है। इस प्रकार समायोजन की चारो विमाओं पर खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी छात्रों के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. बेस्ट, जे0 डब्ल्यू0 श्रिसर्च इन ऐजुकेशनश्‌ प्रन्टाइस हाल, न्यू जर्सी, 1970

2. बुच एम0बी0 फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, 1991

3. बुच एम0बी0 फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, 2000

4. भार्गव, महेश श्आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापनश्‌ आगरा पुस्तक प्रकाशन, 1982

5. देसाई, वी, ए स्टडी ऑफ रूर इको., हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, मुम्बई, 1983

6. जनधयाल, वी0जी0 एजूकेशन एंड रूरल डवलपमेन्ट मैन एण्ड डवलपमेन्ट 4 दिसम्बर, 1982

7. गुप्ता, राजकुमार भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली

8. कपिल एच0के0 सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद प्रकाशन मंदिर, आगरा।

9. माथुर, जे0एस0 जार्ज इकोनोमिक एण्ड सोशल इम्पैक्ट ऑफ डिवलपमैन्ट प्रोग्रामस, एन0आई0आर0डी0 प्रकाशन, हैदराबाद, 1982